# फूलवती जैन की कहानी
## एक साहसपूर्ण फैसला
रीता चतुर्वेदी

फूलवती का जन्म एक रूढ़िवादी परिवार में हुआ था। उसकी मां अनपढ़ और पिता फौज में थे। मां-बाप ने उसे पढ़ाया नहीं। वह केवल कक्षा 2 तक पढ़ सकी। लेकिन पढ़ने की उसमें इतनी लगन थी कि वह स्वयं पढ़ती रही और अब वह पत्र-पत्रिकाएं पढ़ लेती है। उसकी शादी 13 साल की उम्र में कर दी गई और कुछ ही वर्षों में उसके एक लड़की और दो लड़के भी हो गए। फिर आपसी मतभेद के कारण फूलवती और उसके पति ने तलाक ले लिया।

तलाक लिए पांच वर्ष हो गए। अब फूलवती ने एक बंजारा लड़के से विवाह किया है और बहुत खुश है। उसके बच्चे उसके पहले पति के पास रहते हैं, क्योंकि तलाक के समय वह कमाती नहीं थी। फूलवती ने ही यह फैसला किया था कि बच्चे वहां रहें, क्योंकि उनका पिता बच्चों को ठीक तरह से रख सकता था। वह जब बच्चों से मिलना चाहती है तब अपनी मां के यहां बुलाकर मिल लेती है। उसके पति को भी कोई एतराज नहीं होता।

वह दूसरी शादी कर भरतपुर जिले के 'बंजारों का नगला' नामक गांव में रहती है और बहुत खुश है। अभी उसे उन लोगों की भाषा ठीक तरह नहीं आती, पर वह उनकी भाषा और तौर-तरीके सीखने की पूरी कोशिश कर रही है।

उसके नए समाज के लोग भी उससे खुश हैं और कहते हैं कि फूलवती ने ही उनके इस भ्रम को तोड़ा है कि शादी अपनी जैसी हैसियत वाले परिवार में ही सफल होती है। असल में लड़की-लड़के दोनों के स्वतंत्र विचारों का होना ही विवाहित जीवन में सुख पाने के लिए जरूरी है। फूलवती के साहसपूर्ण निर्णय से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। □